॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

महर्षि वाल्मीकिप्रणीत

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण

[सचित्र, हिंदी-अनुवादसहित] (द्वितीय खण्ड)

गीताप्रेस, गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

महर्षिवाल्मीकिप्रणीत

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण

सचित्र, हिंदी-अनुवादसहित

[द्वितीय खण्ड]

(सुन्दरकाण्डसे उत्तरकाण्डतक)

University Department of Yoga RU
No/PGDY/...271...
Library

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

DROLIA PUSTAK BHANDAR
Yoga, Ayurveda, Religious Books & Satkarma
Acupressure evam Magnate Goods
09458949381, 01334-260614,09837300687
Near Bharat Mata Mandir, Haridwar-249410 (U.K.) INDIA
E-mail : drolia_books@yahoo.co.in
Website : www.droliabooks.com

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण खण्ड २ की विषय-सूची

सर्ग	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(सुन्दरकाण्डम्)	
१-	हनुमान्‌जीके द्वारा समुद्रका लङ्घन, मैनाकके द्वारा उनका स्वागत, सुरसापर उनकी विजय तथा सिंहिकाका वध करके उनका समुद्रके उस पार पहुँचकर लङ्काकी शोभा देखना	१७
२-	लङ्कापुरीका वर्णन, उसमें प्रवेश करनेके विषयमें हनुमान्‌जीका विचार, उनका लघुरूपसे पुरीमें प्रवेश तथा चन्द्रोदयका वर्णन.....	३२
३-	लङ्कापुरीका अवलोकन करके हनुमान्‌जीका विस्मित होना, उसमें प्रवेश करते समय निशाचरी लङ्काका उन्हें रोकना और उनकी मारसे विह्वल होकर उन्हें पुरीमें प्रवेश करनेकी अनुमति देना	३६
४-	हनुमान्‌जीका लङ्कापुरी एवं रावणके अन्तःपुरमें प्रवेश	४०
५-	हनुमान्‌जीका रावणके अन्तःपुरमें घर-घरमें सीताको ढूँढ़ना और उन्हें न देखकर दुःखी होना	४२
६-	हनुमान्‌जीका रावण तथा अन्यान्य राक्षसोंके घरोंमें सीताजीकी खोज करना.....	४५
७-	रावणके भवन एवं पुष्पक विमानका वर्णन..	४८
८-	हनुमान्‌जीके द्वारा पुनः पुष्पक विमानका दर्शन	५०
९-	हनुमान्‌जीका रावणके श्रेष्ठ भवन, पुष्पक विमान तथा रावणके रहनेकी सुन्दर हवेलीको देखकर उसके भीतर सोयी हुई सहस्रों सुन्दरी स्त्रियोंका अवलोकन करना	५२
१०-	हनुमान्‌जीका अन्तःपुरमें सोये हुए रावण तथा गाढ़ निद्रामें पड़ी हुई उसकी स्त्रियोंको देखना तथा मन्दोदरीको सीता समझकर प्रसन्न होना	५८
११-	वह सीता नहीं है—ऐसा निश्चय होनेपर हनुमान्‌जीका पुनः अन्तःपुरमें और उसकी पानभूमिमें सीताका पता लगाना, उनके मनमें धर्मलोपकी आशङ्का और स्वतः उसका निवारण होना.....	६२
१२-	सीताके मरणकी आशङ्कासे हनुमान्‌जीका शिथिल होना; फिर उत्साहका आश्रय लेकर अन्य स्थानोंमें उनकी खोज करना और कहीं भी पता न लगनेसे पुनः उनका चिन्तित होना	६५
१३-	सीताजीके नाशकी आशङ्कासे हनुमान्‌जीकी चिन्ता, श्रीरामको सीताके न मिलनेकी सूचना देनेसे अनर्थकी सम्भावना देख हनुमान्‌जीका न लौटनेका निश्चय करके पुनः खोजनेका विचार करना और अशोकवाटिकामें ढूँढ़नेके विषयमें तरह-तरहकी बातें सोचना.....	६८
१४-	हनुमान्‌जीका अशोकवाटिकामें प्रवेश करके उसकी शोभा देखना तथा एक अशोक-वृक्षपर छिपे रहकर वहींसे सीताका अनुसन्धान करना.....	७३
१५-	वनकी शोभा देखते हुए हनुमान्‌जीका एक चैत्यप्रासाद (मन्दिर)-के पास सीताको दयनीय अवस्थामें देखना, पहचानना और प्रसन्न होना	७७
१६-	हनुमान्‌जीका मन-ही-मन सीताजीके शील और सौन्दर्यकी सराहना करते हुए उन्हें कष्टमें पड़ी देख स्वयं भी उनके लिये शोक करना	८१
१७-	भयंकर राक्षसियोंसे घिरी हुई सीताके दर्शनसे हनुमान्‌जीका प्रसन्न होना.....	८३
१८-	अपनी स्त्रियोंसे घिरे हुए रावणका अशोक-वाटिकामें आगमन और हनुमान्‌जीका उसे देखना.....	८६
१९-	रावणको देखकर दुःख, भय और चिन्तामें डूबी हुई सीताकी अवस्थाका वर्णन.....	८८

सर्ग	विषय	पृष्ठ-संख्या
२०-	रावणका सीताजीको प्रलोभन	९०
२१-	सीताजीका रावणको समझाना और उसे श्रीरामके सामने नगण्य बताना	९३
२२-	रावणका सीताको दो मासकी अवधि देना, सीताका उसे फटकारना, फिर रावणका उन्हें धमकाकर राक्षसियोंके नियन्त्रणमें रखकर स्त्रियों-सहित पुनः महलको लौट जाना	९५
२३-	राक्षसियोंका सीताजीको समझाना	९९
२४-	सीताजीका राक्षसियोंकी बात माननेसे इनकार कर देना तथा राक्षसियोंका उन्हें मारने-काटनेकी धमकी देना	१००
२५-	राक्षसियोंकी बात माननेसे इनकार करके शोक-संतप्त सीताका विलाप करना	१०४
२६-	सीताका करुण-विलाप तथा अपने प्राणोंको त्याग देनेका निश्चय करना	१०५
२७-	त्रिजटाका स्वप्न, राक्षसोंके विनाश और श्रीरघुनाथजीकी विजयकी शुभ सूचना	१०९
२८-	विलाप करती हुई सीताका प्राण-त्यागके लिये उद्यत होना	११३
२९-	सीताजीके शुभ शकुन	११५
३०-	सीताजीसे वार्तालाप करनेके विषयमें हनुमान्‌जीका विचार करना	११६
३१-	हनुमान्‌जीका सीताको सुनानेके लिये श्रीराम-कथाका वर्णन करना	११९
३२-	सीताजीका तर्क-वितर्क	१२१
३३-	सीताजीका हनुमान्‌जीको अपना परिचय देते हुए अपने वनगमन और अपहरणका वृत्तान्त बताना	१२२
३४-	सीताजीका हनुमान्‌जीके प्रति संदेह और उसका समाधान तथा हनुमान्‌जीके द्वारा श्रीरामचन्द्रजीके गुणोंका गान	१२४
३५-	सीताजीके पूछनेपर हनुमान्‌जीका श्रीरामके शारीरिक चिह्नों और गुणोंका वर्णन करना तथा नर-वानरकी मित्रताका प्रसङ्ग सुनाकर सीताजीके मनमें विश्वास उत्पन्न करना	१२७
३६-	हनुमान्‌जीका सीताको मुद्रिका देना, सीताका 'श्रीराम कब मेरा उद्धार करेंगे' यह उत्सुक होकर पूछना तथा हनुमान्‌जीका श्रीरामके सीताविषयक प्रेमका वर्णन करके उन्हें सान्त्वना देना	१३४
३७-	सीताका हनुमान्‌जीसे श्रीरामको शीघ्र बुलानेका आग्रह, हनुमान्‌जीका सीतासे अपने साथ चलनेका अनुरोध तथा सीताका अस्वीकार करना	१३७
३८-	सीताजीका हनुमान्‌जीको पहचानके रूपमें चित्रकूट पर्वतपर घटित हुए एक कौएके प्रसङ्गको सुनाना, भगवान् श्रीरामको शीघ्र बुला लानेके लिये अनुरोध करना और चूड़ामणि देना	१४२
३९-	चूड़ामणि लेकर जाते हुए हनुमान्‌जीसे सीताका श्रीराम आदिको उत्साहित करनेके लिये कहना तथा समुद्र-तरणके विषयमें शङ्कित हुई सीताको वानरोंका पराक्रम बताकर हनुमान्‌जीका आश्वासन देना	१४७
४०-	सीताका श्रीरामसे कहनेके लिये पुनः संदेश देना तथा हनुमान्‌जीका उन्हें आश्वासन दे उत्तर दिशाकी ओर जाना	१५१
४१-	हनुमान्‌जीके द्वारा प्रमदावन (अशोक-वाटिका)-का विध्वंस	१५३
४२-	राक्षसियोंके मुखसे एक वानरके द्वारा प्रमदावनके विध्वंसका समाचार सुनकर रावणका किंकर नामक राक्षसोंको भेजना और हनुमान्‌जीके द्वारा उन सबका संहार	१५५
४३-	हनुमान्‌जीके द्वारा चैत्यप्रासादका विध्वंस तथा उसके रक्षकोंका वध	१५८
४४-	प्रहस्त-पुत्र जम्बुमालीका वध	१६०
४५-	मन्त्रीके सात पुत्रोंका वध	१६२
४६-	रावणके पाँच सेनापतियोंका वध	१६३
४७-	रावणपुत्र अक्षकुमारका पराक्रम और वध	१६६
४८-	इन्द्रजित् और हनुमान्‌जीका युद्ध, उसके दिव्यास्त्रके बन्धनमें बँधकर हनुमान्‌जीका रावणके दरबारमें उपस्थित होना	१७०

गीताप्रेस गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०, २३३३०३०